

---

# Shri Ravalanatha StavarAja Stotram

---

## श्रीरवलनाथस्तवराजस्तोत्रम्

---

### Document Information

Text title : Ravalanatha Stavaraja Stotram

File name : ravalanAthastavarAjastotram.itx

Category : shiva, stavarAja

Location : doc\_shiva

Proofread by : Aruna Narayanan

Description/comments : brahmANDapurANe agastinAradasaMvAde

Latest update : September 30, 2023

Send corrections to : sanskrit at cheerful dot c om

---

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

**Please help to maintain respect for volunteer spirit.**

---

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

---

October 6, 2023

*sanskritdocuments.org*

---

श्रीरवलनाथस्तवराजस्तोत्रम्



श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीरवलनाथाय नमः ॥  
खड्गशूलडमरुपात्रदधानं रत्नभूधरमणिरणदीक्षि ।  
तुरङ्गवाहनमयं हतदैत्यं तं नमामि ॥ १ ॥  
सततं कुलदैवतं देवं दक्षिणकेदारं रत्नाचलनिवासिनम् ।  
जमदग्निमहं वन्दे रवलेशमभीष्टदम् ॥ २ ॥  
रत्नासुरमिदंशूरं त्रिमूर्तिलिङ्गचिन्हितम् ।  
ज्योतिरवलनाथं च वन्दे देवारिमर्दनम् ॥ ३ ॥  
एकवीरापतिं सौम्यं ज्योतिर्लिङ्गम्परन्तपम् ।  
रवलारख्यं महाभागं वन्दे भक्तार्तिनाशनम् ॥ ४ ॥  
त्रिशूलं डमरुं खड्गं पात्रं च करपङ्कजैः ।  
बिभ्राणरेणुकानाथं वन्दे तं रवलेश्वरम् ॥ ५ ॥  
महालक्ष्मीप्रियं शान्तं ब्रह्माविष्णुशिवात्मकम् ।  
ब्रह्मकर्मरतं दान्तं वन्दे कामप्रदं द्विजम् ॥ ६ ॥  
शेषस्थं करुणासिन्धुं कारुण्यं कविताप्रदम् ।  
दैत्यघ्नं वसुदं विप्रं वन्दे वैरिविमर्दनम् ॥ ७ ॥  
कुण्डलिनं विरूपीणं शुभं यज्ञोपवीतिनम् ।  
वाणगी नूपुरारावसंयुक्तं वन्दे पद्मगवाहनम् ॥ ८ ॥  
दीनानाथं नाथनाथं सिद्धिदं सिद्धिसेवितम् ।  
भुक्तिमुक्तिप्रदातारं वन्दे हंसकलात्मकम् ॥ ९ ॥  
य इदं स्तवराजं तु रवलेशमहात्मनः ।  
त्रिकालंयोजपेत्प्राज्ञस्तस्यस्याद्वाञ्छितं फलम् ॥ १० ॥  
शतावृत्या व्याधिनाशं सहस्राद्वर्तनाद्वसु ।

विद्यायुष्यं लभेच्छीघ्रं भवत्येव न संशयः ॥ ११ ॥

धर्मार्थकाममोक्षाणां प्राप्तिस्त्यान्नित्यजाप्यतः ।


इति श्रीब्रह्माण्डपुराणे अगस्तिनारदसंवादे श्रीरवलनाथस्तवराजस्तोत्रं सम्पूर्णम् ।  
श्रीनाथचरणार्पणमस्तु ॥

॥ शुभं भवतु ॥

Although it is mentioned in colophone that  
the stotra is in Brahmandapurana, the  
location is not traceable in the printed book.

Proofread by Aruna Narayanan

---

——  
*Shri Ravalanatha StavarAja Stotram*  
pdf was typeset on October 6, 2023

Please send corrections to [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

